

आलोचना: →

1) Prof. Hansen का कहना है कि classical Economist की भांति केन्स का सिद्धान्त भी indeterminate है अर्थात् इसके द्वारा भी व्याज की दर विहित रूप में निर्धारित नहीं हो पाती है। इसमें निधारण के लिए मुद्रा की मांग को महत्वपूर्ण माना जाता है परन्तु Liquidity Preference पर आय स्तर में होने वाले परिवर्तनों का प्रभाव पड़ता है।

2) Prof. Henry Hazlitt ने केन्स के व्याज सिद्धान्त की निम्नलिखित 'आधारों' पर आलोचना की है: →

(1) केन्स का व्याज-सिद्धान्त एकपक्षीय (One sided) है। व्याज दर के निर्धारण में केवल मौद्रिक तत्वों की ओर ध्यान दिया गया है, जबकि उत्पादकता तथा समय आधिमान जैसे वास्तविक तत्व भी व्याज की दरों पर प्रभाव डालते हैं। एक पूर्ण सिद्धान्त में मौद्रिक तत्वों के साथ-साथ वास्तविक तत्वों को भी सम्मिलित किया जाना चाहिए।

(ii) कैरस नै ध्याज की तरलता के परिचायक का प्रारूप माना है, जबकि वास्तविकता यह है कि बिना बचत किये तरलता उत्पन्न नहीं होती जिसका परिचायक किया जाये। ध्याज के किली भी सिद्धान्त में बचत की उपेक्षा करना उचित नहीं है।

(iii) तरलता - आधिमान सिद्धान्त गलत है। जिन बंधों की यह सिद्धान्त धारणा करता है उनकी व्यवहारिक स्थिति के आधार पर पुष्टी नहीं हो पाती है। यदि यह सिद्धान्त ठीक होता तो मन्दी के निम्नतम बिन्दु पर ध्याज-दर उच्चतम होती, क्योंकि कीमत गिर जाने के कारण उस समय लोगों का तरलता - आधिमान उँचा होता है परन्तु व्यवहारिक रूप में मन्दी के निम्नतम बिन्दु पर ध्याज की दर भी न्यूनतम होती है। इसी प्रकार, तेजी के शिखर पर ध्याज-दर न्यूनतम नहीं, बल्कि उच्चतम होती है।

(iv) तरलता - आधिमान की धारणा आस्पष्ट और ~~सम~~ समात्मक है। उदाहरण के लिए यदि कोई व्यक्ति अपने धन को काल-जमा राशिओं (time deposits) में लगा देता है तो उसे ध्याज की प्राप्ति के साथ साथ तरलता भी उपलब्ध होती है। तरलता आधिमान की धारणा ध्याज की समाप्ति पर प्रकाश डालने के बजाय उसे और अधिक उलझा देती है।

(3) तरलता - आधिमान सिद्धान्त ध्याज-दर के निर्धारण की निर्भरता धारणा प्रस्तुत करता है। तरलता के लिए इच्छा केवल तीन उद्योगों के लिए ही नहीं की जाती है, बल्कि कुछ अन्य उद्योगों होते हैं, जिसकी ओर कैरस नै ध्यान नहीं दिया है।

(4) ध्याज का भुगतान ऋणदाता को इसलिए किया जाता है कि पूंजी में उत्पादकता का गुण है और इसके उपभोग के द्वारा स्वामी अपने उत्पादन तथा आय में वृद्धि करता है। तरलता - आधिमान सिद्धान्त में पूंजी की उत्पादकता की ओर ध्यान देना उचित नहीं है।

DATE

- (5) तरलता-आधिमान सिद्धान्त केवल अल्पकाल में ल्याज-निधारण की व्याख्या करता है। यहाँ सिद्धान्त की ल्याज-निधारण की दीर्घकालीन शक्ति-यों पर प्रकाश नहीं डालता है।
- (6) कैंसर के ल्याज-द्र को विनियोग की मांग से अलग रखा है जो कि ठीक नहीं है। आलोचकों का कहना है कि व्यवसायिकों के संकट-क्षेत्रों का आकार उनकी विनियोग के लिए पूँजी की मांग पर निर्भर करता है।
- स्पष्ट है कि कैंसर का ल्याज सिद्धान्त अपेक्षा अधिक प्रचार-पूरण एवं प्रौढ होने पर भी पूँजीत! दीर्घ मुक्त नहीं है।